

सम्बन्धों को समझना, सहेजना

डा.सविता बहन, शान्तिवन, आबू रोड़ (राज.)

सम्बन्धों की इमारत प्रेम, त्याग, सामंजस्य, विश्वास, सम्मान, समझदारी, मिठासपूर्ण व्यवहार के स्तंभों पर टिकी रहती है। इनमें से एक भी स्तंभ के हिलते ही इमारत ढहने की नौबत आ जाती है। छोटी-छोटी बातों को तूल देकर बढ़ाना नहीं चाहिये। रिश्तों की सार्थकता उन्हें निभाने में है। कुछ रिश्ते नाजुक होते हैं जैसे सास-बहू, ननद-भाभी, देवरानी-जेठानी, देवर-भाभी, ससुर-बहू आदि, इन रिश्तों में व्यवहार में आते समय विशेष समझदारी रखनी चाहिये।

सास-बहू:- नीला की शादी हुये कुछ ही महीने हुये और वह बुझी-2 सी रहने लगी। पति के आफिस चले जाने के बाद, घर में जो भी काम करती सास उसमें कमी निकालने की कोशिश करती और फिर बात-2 में उसके माता-पिता को भला बुरा कहती। पति ने उदासी का कारण पुछा तो आखिर एक दिन नीला ने सारी बात पति को बता दी तो मां-बेटे में मतभेद होने लगा। बेटे से दूरियां पनपने लगी। सास-बहू में ज्यादातर झगड़े काम को लेकर होते हैं। सास अपने ढंग से काम करना चाहती है तो बहू अपने तरीके से दोनों अपने को अपनी-2 जगह सही समझती हैं। आप बहू हैं तो आपको समझना होगा कि इस परिवार में सभी सास के तरीकों में ढले होते हैं ऐसे में उनसे तौर-तरीकों को बदलने की कोशिश न करें। कुछ बहुयें ऐसी होती हैं जो सास की बताई बातों को अपनाना तो दूर, सुनना तक पसंद नहीं करती, सास उन्हें परंपराओं के बारे में बताती हैं तो वे रूचि नहीं लेती। बहुओं को ध्यान रखना चाहिये कि नये परिवार में परंपरायें अपनी होंगी और यदि वे उनपर ध्यान नहीं देंगी तो नई पीढ़ी को क्या संस्कार देंगी। यह रिश्ता पूरी तरह आपसी समझदारी, विश्वास पर टिका होता है। यदि आप आधुनिक हैं और रूढ़िवादी परंपरायें पसंद नहीं हैं, तो अपने विचार सास के सामने नम्रता से रखे, उसका औचित्य बतायें। फिर सास को भी चाहिये यदि वह सही है तो उसे स्वीकार करें, या परिवर्तन करें।

लाडली बहु बनने के लिये- सास के अनुसार काम करने की आदत शुरू में थोड़ी मुश्किल होगी लेकिन फिर सास आपकी तारीफ करते नहीं थकेंगी। कोशिश की जाये उन्हें अपना बनाने की। दूसरी तरफ सास को भी आगे बढ़कर बेटे-बहु की खुशी में साथ देना चाहिए। यदि वो घूमने जाना चाहते हैं तो जाने दें। बहु यदि कुछ अच्छा बनाती है तो उसकी तारीफ करें। बहू की कमियां निकालने की बजाय खूबियां देखें।

देवरानी-जेठानी :- दोनों अलग-2 परिवारों से आती हैं। उनकी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थिति भी एक दूसरे से भिन्न होती है, इसलिये विचारों का अलग होना स्वाभाविक है और ऐसे में उनके बीच नोक-झोंक चलती रहती है।

बहुओं को ससुराल में रहना होता है, अतः उन्हें मायके की बातों को छोड़कर ससुराल में रचना बसना चाहिये। यदि दोनों में कोई बात है तो सास को समझाना चाहिये। इस रिश्ते में शालीनता मधुरता बेहद जरूरी है। जेठानी को बड़ी बहु के रूप में सहनशीलता का परिचय देना चाहिये और थोड़ी बहुत ऊंच नीच को नजरअंदाज कर देना चाहिये। छोटी बहु को भी जेठानी का सम्मान करना चाहिये। जेठ भी अपनी सीमायें न भूलें। अपने छोटे भाई से अनबन होने पर वो बहु को भी सुनाने से नहीं चूकते। और एक हद के बाद बहू भी सामने बोलने लगती है। और स्थिति बिगड़ती है।

अतः छोटे भाई से अनबन होने के बावजूद उसकी पत्नी के मान-सम्मान में कोई कटौती न करें। यदि घर में कुछ सामान आ रहा है तो दोनों के लिये समान हो। साथ बैठे कर खायें, कभी-2 साथ घुमने जायें।

ननद-भाभी:- दोनों का सम्बन्ध भी संवेदनशील होता है, छोटी-2 बातों पर नोक झोंक होती रहती है। यदि ननद-भाभी से बहुत अपेक्षायें रखती है। भाभी के हर काम में नुक्स निकालती है तो भाभी भी अपना पद उंचा समझकर ननद को आर्डर देने लगती है, हम उम्र ननद को समझना चाहिये कि भाई की तरह भाभी भी उसकी अपनी है। यह न सोचे कि भाभी ने आकर उसके अधिकार छीन लिये हैं ननद-भाभी अच्छी दोस्त बन सकती हैं, बस जरूरत है एक-दो का सम्मान करने की एवं आपसी तालमेल बनायें रखने की।

कुछ जिम्मेदारी मात-पिता की भी होती है। वह शुरू से ही बेटे-बहू को समझा दें कि दोनों में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। तो दोनों के मन में मनमुटाव नहीं आएगा।

देवर-भाभी:- के रिश्ते में जब तक देवर की शादी नहीं होती वह भाभी का सम्मान करता है। और भाभी भी देवर को लाड करती है। यदि भाभी घर में सबका ख्याल रखती है तो देवर अपनी पत्नी में भी वही गुण देखना चाहता है, लेकिन इसका मतलब नहीं कि घर में पत्नी के आते ही उसके सामने भाभी के गुणगान करने लगे। देवर को समय देकर अपनी पत्नी को भाभी के गुणों के बारे में बताना चाहिये। और भाभी को भी देवरानी के, देवर के ज्यादा से ज्यादा काम करने देना चाहिये। इस तरह रिश्तों को सहज बनाये रखा जा सकता है।

नाजुक रिश्तों में आपसी समझ, समझदारी, सामंजस्य, सम्मान, विश्वास, प्रेम, त्याग का होना आवश्यक है। तभी संबंधों की इमारत जीवन भर मजबूती से टिकी रहती है। ये गुण जीवन-व्यवहार में रहें, इसके लिये आत्मअवलोकन, आत्मनिरीक्षण आवश्यक है। स्वयं को परिवर्तन करने की, झुकने की, गलती स्वीकार कर बदलने की भावना हो। स्वयं के लिये थोड़ा समय निकालें, कुछ समय परमात्मा का स्मरण कर मन को शांत करें तो स्वतः ही परिवर्तन की शक्ति आने लगेगी। और हर संबंध में शुभभावना, शुभकामना, सुख देने की भावना, सेवा की भावना रखना आसान हो जायेगा।